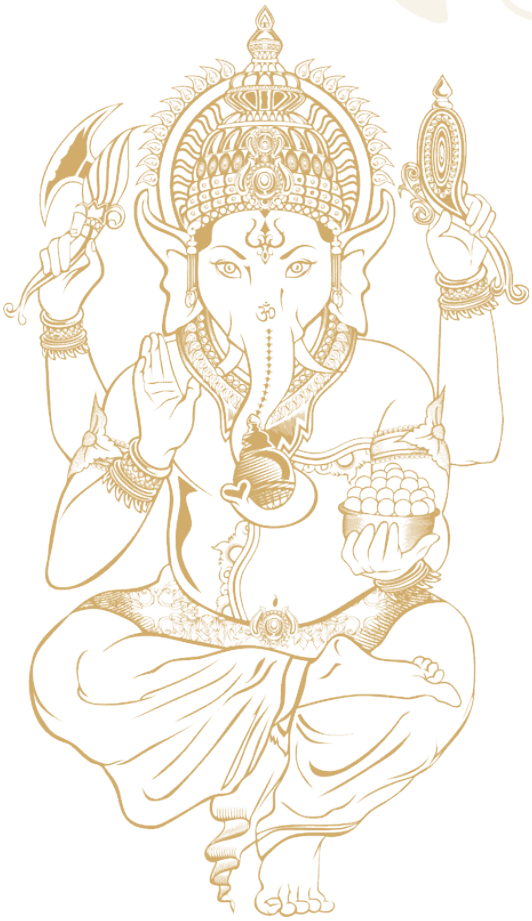

Mr.praveen Jagga

Ms.charu Rajesh Nagpal

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119539701

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119539701 Date: 23/09/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
09/03/1993	जन्म तिथि	25-26/07/1997
मंगलवार	दिन	शुक्र-शनिवार
घंटे 07:22:00	जन्म समय	02:10:00 घंटे
घटी 01:37:17	जन्म समय(घटी)	51:08:53 घटी
India	देश	India
Hansi	स्थान	Hissar
29:06:00 उत्तर	अक्षांश	29:10:00 उत्तर
76:01:00 पूर्व	रेखांश	75:45:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:25:56	स्थानिक संस्कार	-00:27:00 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:43:05	सूर्योदय	05:43:22
18:29:44	सूर्यास्त	19:23:11
23:46:00	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:22
मीन	लग्न	वृष
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	शुक्र
कन्या	राशि	मीन
बुध	राशि-स्वामी	गुरु
उ०फाल्गुनी	नक्षत्र	रेवती
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	बुध
3	चरण	4
शूल	योग	धृति
कौलव	करण	बव
पा-पवन	जन्म नामाक्षर	ची-चित्रलता
मीन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह
वैश्य	वर्ण	विप्र
मानव	वश्य	जलचर
गौ	योनि	गज
मनुष्य	गण	देव
आद्य	नाड़ी	अन्त्य
मूषक	वर्ग	सिंह

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 2वर्ष 6मा 10दि		07:22:02	मीन	लग्न	वृष	20:13:31	बुध 3वर्ष 4मा 24दि	
राहु		24:44:25	कुंभ	सूर्य	कर्क	09:05:53	शुक्र	
18/09/2012		04:22:50	कन्या	चंद्र	मीन	27:19:59	19/12/2007	
18/09/2030		17:33:30	मिथु	मंगल	कन्या	24:39:23	19/12/2027	
राहु	01/06/2015	24:55:07	कुंभ व	बुध	सिंह	04:39:29	शुक्र	20/04/2011
गुरु	24/10/2017	18:38:40	कन्या व	गुरु व	मक	25:02:45	सूर्य	19/04/2012
शनि	30/08/2020	26:08:55	मीन	शुक्र	सिंह	08:57:24	चन्द्र	19/12/2013
बुध	20/03/2023	00:24:15	कुंभ	शनि	मीन	26:29:52	मंगल	18/02/2015
केतु	06/04/2024	22:48:34	वृश्चि व	राहु	सिंह	27:00:20	राहु	18/02/2018
शुक्र	07/04/2027	22:48:34	वृष व	केतु	कुंभ	27:00:20	गुरु	19/10/2020
सूर्य	01/03/2028	27:27:46	धनु	हर्ष व	मक	13:01:54	शनि	19/12/2023
चन्द्र	31/08/2029	26:50:29	धनु	नेप व	मक	04:37:20	बुध	19/10/2026
मंगल	18/09/2030	01:43:27	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	09:05:55	केतु	19/12/2027

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:46:00 चित्रपक्षीय अयनांश 23:49:22

लग्न-चलित

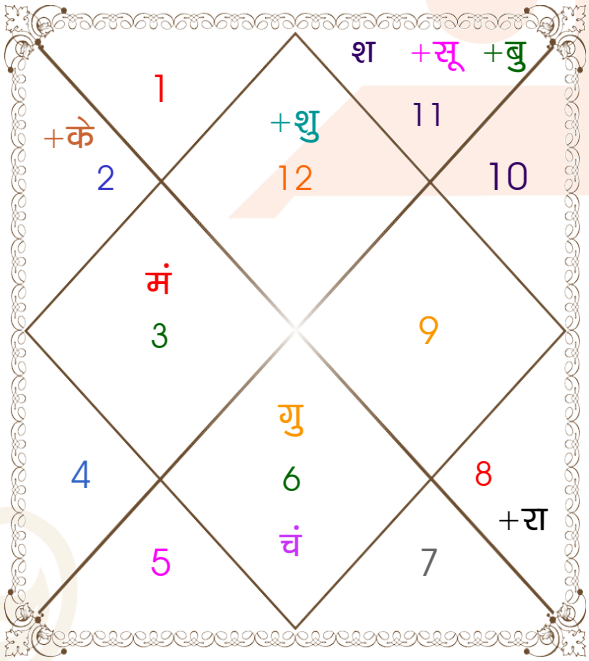

लग्न-चलित

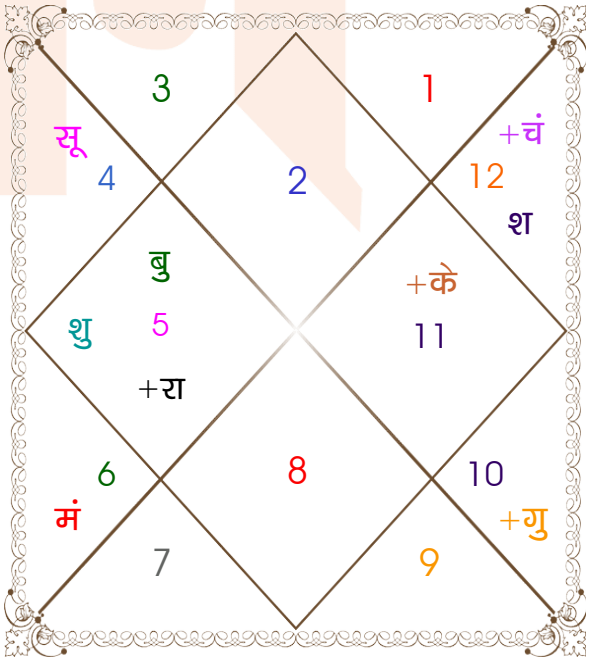

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गौ	गज	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	गुरु	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	कन्या	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.00		

कुल : **26 / 36**

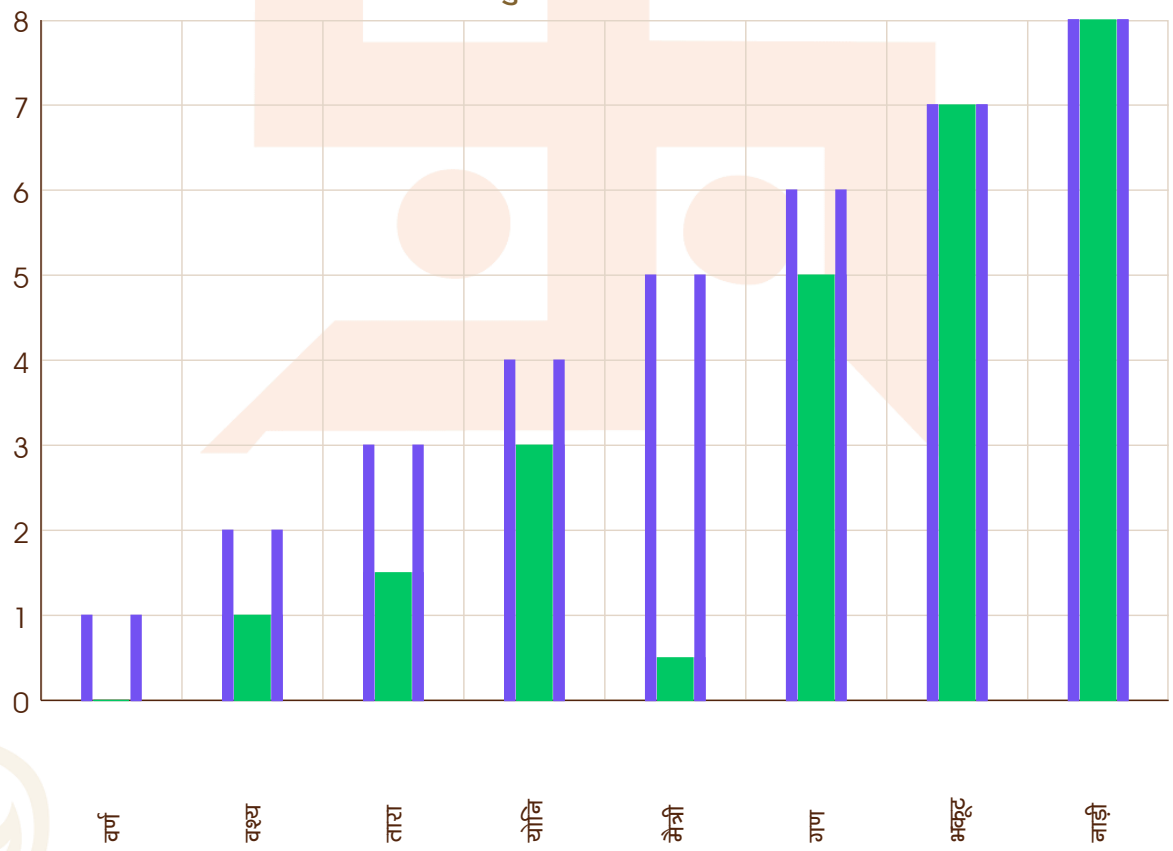

अष्टकूट मिलान

डतण्चतंअममद श्रंहहं का वर्ग मूषक है तथा डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्चतंअममद श्रंहहं और डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्चतंअममद श्रंहहं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्चतंअममद श्रंहहं तथा डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

डतण्चतंअममद श्रंहहं का वर्ण वैश्य है तथा डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस का वर्ण ब्राह्मण है। क्योंकि डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस का वर्ण डतण्चतंअममद श्रंहहं के वर्ण से ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस अति अहंकारी, शाहखर्च एवं दिखावा करने वाली होगी। डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस को हमेशा यह महसूस होता रहेगा कि उसका पति निम्न दर्जे का है तथा बहुत कम कमाता है। इस कारण से उसमें निराशा की भावना घर कर कर सकती है।

वश्य

डतण्चतंअममद श्रंहहं का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस का वश्य जलचर है अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। मनुष्य एवं जलचर दोनों प्रकृति के अंग हैं यद्यपि कि दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग होते हैं तथा प्रकृति ने दोनों के अलग-अलग कार्य एवं उत्तरदायित्व निर्धारित किये हैं। इसलियें डतण्चतंअममद श्रंहहं एवं डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस दोनों सामान्यतः एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा एक-दूसरे के लिए हानिकारक सिद्ध नहीं होंगे। सामान्यतः डतण्चतंअममद श्रंहहं डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस पर नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होगा। हालांकि यह अनुकूल मिलान नहीं है क्योंकि डतण्चतंअममद श्रंहहं हमेश डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस के ऊपर हावी रहेगा।

तारा

डतण्चतंअममद श्रंहहं की तारा क्षेम तथा डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस की तारा वध है। डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह डतण्चतंअममद श्रंहहं एवं डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल सकता है। डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली साबित हो सकती है। अतः संभव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत सकते हैं तथा सफलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है।

योनि

डतण्चतंअममद श्रंहहं की योनि गौ है तथा डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस की योनि गज है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के

साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में डतण्चतंअममद श्रंहहं का राशि स्वामी डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस का राशि स्वामी डतण्चतंअममद श्रंहहं के राशि स्वामी के साथ शत्रु का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए सम किंतु दूसरा उसे शत्रु मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

डतण्चतंअममद श्रंहहं का गण मनुष्य तथा डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर डतण्चतंअममद श्रंहहं व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण डतण्चतंअममद श्रंहहं अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

डतण्चतंअममद श्रंहहं एवं डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस की राशियां एक दूसरे से सम सप्तक (1/7) हैं। जिसके कारण इस मिलान को अति उत्तम मिलान माना जाता है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान अति शुभ है तथा डतण्चतंअममद श्रंहहं व डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस को शांति, सुख, सौभाग्य, समृद्धि, योग्य संतान एवं चतुर्दिक विकास के अवसरसमय-समय पर मिलते रहेंगे। साथ ही दोनों के बीच असीम प्यार बना रहेगा तथा दोनों हर कार्य में एक-दूसरे की मदद करते रहेंगे।

नाड़ी

डतण्चतंअममद श्रंहहं की नाड़ी आद्य है तथा डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान में शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ का संतुलन होता है। डतण्चतंअममद श्रंहहं की आद्य नाड़ी तथा डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस की अन्त्य नाड़ी अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ एवं मजबूत शरीर, दम्पत्ति के आपसी प्रेम एवं समझदारी की द्योतक हैं। जिसके कारण आपकी संतान स्वस्थ, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

डतण्चतंअममद श्रंहहं की जन्म राशि पृथ्वीतत्व युक्त कन्या तथा डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस की राशि जलतत्व युक्त मीन राशि है। पृथ्वी एवं जलतत्व की परस्पर मित्रता एवं समानता होने के कारण डतण्चतंअममद श्रंहहं और डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस के मध्य स्वभावगत समानताएं विद्यमान होंगी जिससे उनका वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः मिलान सामान्यतया शुभ रहेगा।

डतण्चतंअममद श्रंहहं की राशि का स्वामी बुध तथा डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस की राशि का स्वामी गुरू परस्पर शत्रु एवं सम भाव में पड़ते है। अतः इसके प्रभाव से इनके मध्य यदा कदा मतभेद तथा विरोध का भाव उत्पन्न होगा। साथ ही एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों की ओर विशेष ध्यान देंगे तथा आलोचना आदि भी करेंगे फलतः परस्पर संबधों में कटुता तथा तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा परन्तु यदि डतण्चतंअममद श्रंहहं और डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस बुद्धिमता से कार्य लें तथा परस्पर संयत व्यवहार करें तो उनका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है।

डतण्चतंअममद श्रंहहं और डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस की राशियां परस्पर सप्तम से सप्तम भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से डतण्चतंअममद श्रंहहं और डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस के उपरोक्त दुष्प्रभावों में कमी आएगी तथा परस्पर प्रेम सहयोग सहानुभूति तथा समर्पण का भाव होगा तथा एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हुए सुख दुःख में सहयोग प्रदान करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन की सुख शांति तथा प्रसन्नता में वृद्धि होगी ।

डतण्चतंअममद श्रंहहं का वश्य मानव तथा डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर के मध्य नैसर्गिक असमानता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर में भी असमानता होगी। अतः काम संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

डतण्चतंअममद श्रंहहं का वर्ण वैश्य तथा डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस का वर्ण ब्राह्मण है अतः इनकी कार्य क्षमताओं में असमानता रहेगी। डतण्चतंअममद श्रंहहं की प्रवृति धनार्जन में प्रवृत रहेगी तथा व्यापारिक बुद्धि से कार्यो को सम्पन्न करेंगे। डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस की शैक्षणिक तथा धार्मिक कार्यो में विशेष रूचि रहेगी तथा इन कार्यो को करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

धन

डतण्चतंअममद श्रंहहं और डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग

स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

डतण्चतंअममद श्रंहहं की नाड़ी आद्य तथा डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस की नाड़ी अन्त्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण इन पर नाड़ी दोष का प्रभाव नहीं रहेगा जिससे किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा परन्तु मंगल का डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस के स्वास्थ्य पर अशुभ प्रभाव होगा जिससे उनको गर्भपात संबंधी परेशानी की संभावना होगी तथा धातु संबंधी रोगों से भी यदा कदा कष्ट की प्राप्ति होगी। साथ ही मासिक धर्म संबंधी परेशानी का भी यदा कदा सामना करना पड़ेगा। अतः मंगल के इस दुष्प्रभाव को कम करने के लिए डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से डतण्चतंअममद श्रंहहं और डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त डतण्चतंअममद श्रंहहं और डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से डतण्चतंअममद श्रंहहं और डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार डतण्चतंअममद श्रंहहं और डेण्बींतन त्ंरमेी छंहचंस का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस तथा उसकी सास के परस्पर संबध अच्छे नहीं रहेंगे। आयु में अधिक अन्तर होने के कारण इनके गहन मतभेद रहेंगे। लेकिन अन्य कोई भी समस्या इतनी गंभीर नहीं होगी जिनका कोई समाधान न हो। अतः यदि डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस धैर्य एवं बुद्धिमता पूर्वक सामंजस्यशील प्रवृति का अनुसरण करें तो सास से संबधों में अनुकूलता आ सकती है। अतः अपनी ओर से उन्हें उनकी पूर्ण रूप से सेवा तथा सुख सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए।

ससुर के साथ डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस के संबध मधुर रहेंगे तथा अपने विनम्र व्यवहार सम्मान की भावना तथा सेवा की प्रवृति से उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में प्रसन्न रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से संबधों में प्रतिकूलता रहेगी तथा आपस में ईर्ष्या, प्रतिद्वन्दिता एवं आलोचना का भाव रहेगा।

इस प्रकार डेण्बींतन त्ंरमी छंहचंस का ससुराल में समय सामान्य रूप से ही व्यतीत होगा तथा अन्य जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

ससुराल-श्री

डतण्चतंअममद श्रंहहं तथा उनकी सास के आपसी संबधों में विशेष मधुरता नहीं रहेगी तथा कई मामलों में उनके मध्य काफी प्रबल मतभेद समय समय पर दृष्टि गोचर होंगे। अतः यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता के भाव का प्रदर्शन किया जाय तो इन मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा आपसी संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी जिससे स्नेह एवं सम्मान का भाव बना रहेगा।

लेकिन ससुर के साथ में डतण्चतंअममद श्रंहहं के संबध अच्छे रहेंगे तथा वह उन्हें अपने पिता की तरह मान सम्मान तथा सेवा का भाव प्रदान करेंगे। साथ ही समयानुसार वह डतण्चतंअममद श्रंहहं को अपनी ओर से बहुमूल्य तथा आवश्यक सलाह भी प्रदान करते रहेंगे एवं उन्हें अपने पुत्र के समान अपनत्व तथा स्नेह प्रदान करेंगे। साले एवं सालियों के साथ ही डतण्चतंअममद श्रंहहं के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे वांछित आदर सहयोग एवं सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही उनसे सामंजस्य का भाव भी रहेगा। इस प्रकार ससुराल का दृष्टिकोण डतण्चतंअममद श्रंहहं के प्रति अनुकूल ही रहेगा।